चिकुनगुनिया

– डॉ. हरिहर त्रिवेदी

चिकुन गुनिया एक प्रकार का वायरल बुखार है जो कि संक्रमित (Infected) मच्छर के काटने के द्वारा होता है। यह भी डेन्गू एवं मलेरिया जैसे बुखारों के समान मच्छर के काटने से होता है। जहाँ डेन्गू एवं मलेरिया जानलेवा भी हो सकते हैं, चिकन गुनिया का बुखार जानलेवा तो नहीं होता परंतु बुखार उतरने के बाद भी मरीज को महीनों तक जोड़ों में दर्द बना रहा सकता है। जोड़ों में दर्द से काम न कर पाने के कारण कई गरीब मजदूर महीनों तक अपनी रोजी–रोटी के लिये मोहताज हो जाते हैं। भारत के कुछ भागों में मुख्यतः मध्य भारत एवं दक्षिण भारत के कुछ स्थानों में सदैव बना रहता है। यह पहली बार 1955 में मेरिआन राबिन्सन एवं लुक्सडेन नाम के दो चिकित्सक वैज्ञानिकों के द्वारा प्रकाश में लाया गया था। यह 1952 में मोस्माबिक एवं तोगानिका में यह बीमारी महामारी के रूप में उभरी थी।

यह शब्द चिकन गुनिया एक 'पेड़ की जड़' से निकला है जिसका मतलब होता है पूर्णतः मुड़ा हुआ होना। इस प्रकार का नाम देने का मुख्य कारण यह है कि इस बुखार के कारण शरीर के अधिकतर जोड़ों में दर्द होने की वजह से शरीर एक प्रकार से अकड़ सा जाता है। जोड़ों में अकड़न का स्वरूप वह वृक्ष की जड़ के समान सा दिखता है इसलिये इस बुखार का नाम इस प्रकार दिया गया है। भारत में यह बिमारी पहले कभी भी विकराल रूप में नहीं पाई गई। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब में तो यह बिमारी बिल्कुल नहीं पाई गई। पर अभी कुछ दिनों पहले कुछ मरीजों में होने की खबर थी पर पूर्णतः पुष्टि नहीं हो पाई है। पर केरल एवं दक्षिण भारत में यह समय–समय पर पाई गई है। सन् 2005–2006 में यह कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान के कुछ स्थानों पर इस रोग के मरीज बड़ी संख्या में पाये गये हैं।

सन् 2006 में आंध्रप्रदेश में इसने एक महामारी का रूप धारण कर लिया था। सबसे पहले कुछ रोगी हैदराबाद में पाये गये, उसके उपरांत अन्य जिले भी जैसे गुलबर्गा, रायचूर, दावणगिरी इत्यादि इसकी चपेट में आ गये।

मुख्य लक्षण : मच्छर के काटने और बुखार आने के बीच का समय 3 से 9 दिन का होता है। यह समय मलेशियाई चिकित्सकों के द्वारा बताया गया है। पर मुख्यतः यह समय 2–8 दिन। जबकि भारतीय चिकित्सकों की मान्यता के अनुसार यह 3 से 6 दिन तक रहता है। इसे हम मूल (Incubation) पीरियड भी कह सकते हैं। इससे मुख्यतः तेज बुखार, शरीर में अत्यधिक दर्द,

मच्छर बोले तो .....

मच्छर ने कहा इन्सान से,
न मारो हम को जान से ।
बात बढ़ जायेगी, जंग छिड़ जायेगी।
यदि तुम पर मरने मारने का जुनून है,
तो हमारी रगों में भी तुम्हारा ही खून है ।

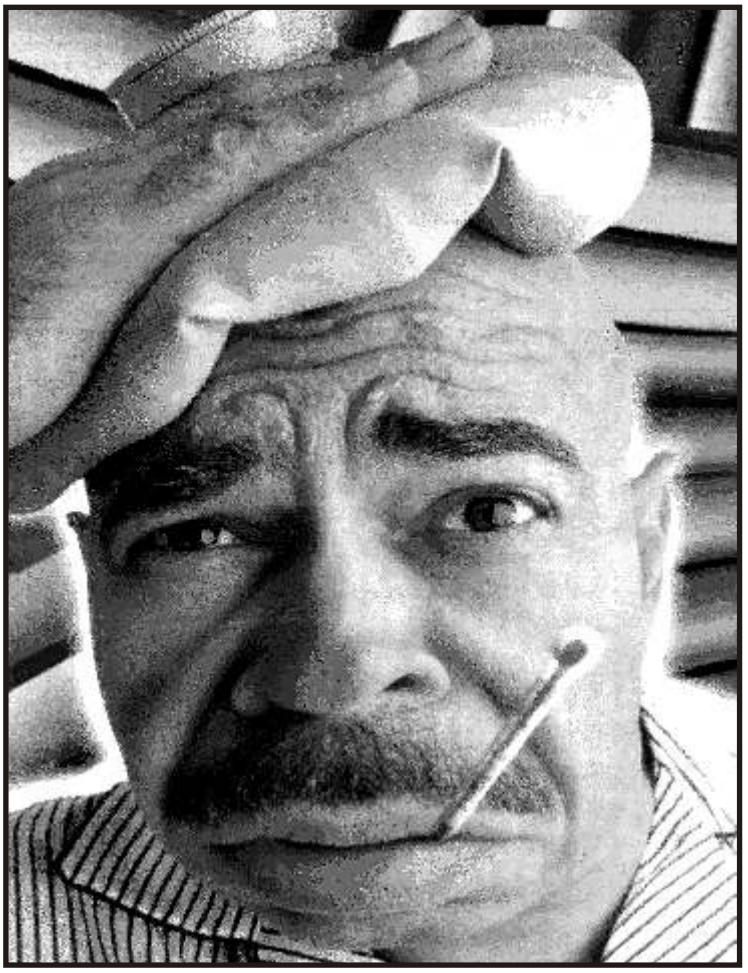

जोड़ों में अत्यधिक दर्द, अकड़न एवं सूजन। यह मुख्यत: हाथों में उंगलियों के जोड़, पैर की उंगलियों के जोड़, कलाई, टखना अधिक प्रभावित होते हैं। पर घुटने के जोड़ एवं कंधे के जोड़ कुछ हद तक बिना प्रभावित हुये नहीं रहते। इन्हीं के साथ सिर दर्द, कमर दर्द, गले में खराश भी रहती है। गले की खराश की वजह से सूखी खाँसी भी होने लगती है। आँखों में भी प्रभाव हो सकता है जिसकी वजह से रोशनी से आँखों में दर्द होने लगता है। 3 से 5 दिन के बाद गर्दन की एवं शरीर में दूसरे भागों में सूजन आ जाती है। दर्द एवं उल्टी भी होने लगती है। बुखार भी 100° से 103°, 104° तक चला जाता है। बुखार सुबह एवं शाम के समय ज्यादा हो जाता है एवं 3 से 9 दिन तक रहता है। फिर कुछ समय तक बुखार नहीं रहता। कुछ दिनों के बाद पुन: बुखार आता है पर यह काफी कम समय रहता है एवं पुन: बुखार मुक्त हो जाता है। बच्चों में जोड़ों पर असर नहीं होता उन्हें काफी तेज बुखार आता है तथा कभी–कभी बुखार की वजह से पूरे शरीर में झटके (Siezures) आने लगते हैं। बच्चों को पेट दर्द एवं उल्टी एवं कब्ज की शिकायत ज्यादा रहती है।

बुखार के साथ शरीर पर दानें भी हो सकते हैं। यह दानें मुख्यत: पेट पर, चेहरे पर हाथों पर एवं जीभ के नीचे वाले भाग में हो जाते हैं। यह सब लक्षण 3 से 6 दिन में धीरे–धीरे कम हो जाते हैं। कई मरीजों में जोड़ों का दर्द काफी समय तक बना रहता है एवं काफी तकलीफदेह रहता है। साथ ही कमजोरी का अनुभव होना एवं सिर का भारीपन होना काफी समय तक रह सकता है।

यह बिमारी सीमित स्थिति में ही रहती है पर बिमारी का भयंकर रूप धारण करने का मुख्य कारण पानी की कमी एवं शरीर में ग्लूकोज एवं अन्य मुख्य लवणों (Minerals) की कमी होने की वजह से होता है। यह बिमारी अपने आप कुछ समय बाद ठीक हो जाती है। सिर्फ 3–5 प्रतिशत लोगों में लम्बे समय तक जोड़ों का दर्द बना रहता है। कुछ की मृत्यु भी हुई है पर यह सोचा जाता है कि मृत्य का कारण अनावश्यक रूप से दवाओं का उपयोग होना हो सकता है। क्योंकि इस बिमारी से खून में प्लेटलेट

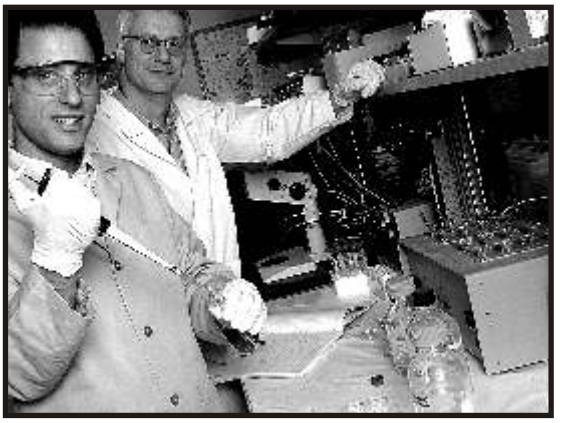

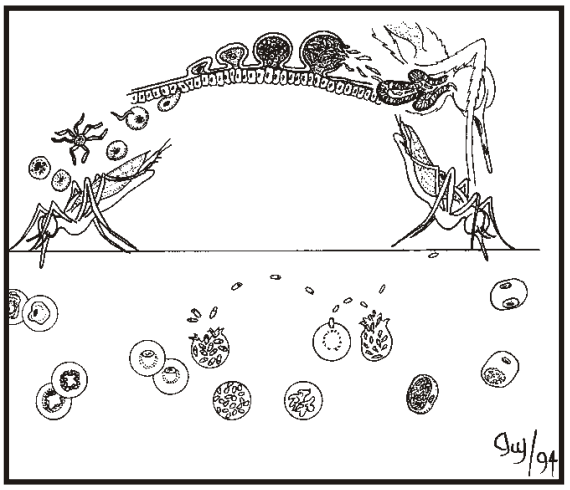

की कमी हो सकती है। एस्प्रिन एवं इसी तरह की दवाईयाँ लेने की वजह से पेट में ललामी एवं छोटे–छोटे अत्यधिक सूक्ष्म अल्सर हो जाते हैं इनकी वजह से कभी–कभी खून की उल्टी होने लगती है। कभी–कभी स्टीराईड ग्रुप की दवाएँ लेने से भी स्थिति बिगड़ जाती है। पानी में कमी की वजह से गुर्दे पर भी असर होता है एवं स्थिति बिगड़ सकती है। पर यह स्थिति बहुत ही कम मरीजों में होती है 1 या 2 प्रतिशत में।

कुछ पैथालॉजिकल टेस्ट के द्वारा बिमारी को कन्फर्म किया जा सकता है। ये टेस्ट है महँगे होते हैं। कभी–कभी डेन्गू बुखार एवं चिकन गुनिया साथ–साथ हो सकते हैं चूंकि दोनों लगभग करीब–करीब एक जैसे हैं। इसलिये दोनों की अलग–अलग पहचान जरूरी है। इसके लिये डेन्गू बुखार के लिये अलग टेस्ट होते हैं। इस तरह दोनों को अलग–अलग से पता लगाया जा सकता है। इसका कोई मुख्यत: इलाज नहीं है। यह अपने आप में एक सीमित बिमारी है एवं

समय के साथ ही ठीक हो जाती है।

लक्षणों के निवारण के लिये ही सामान्यत: इलाज किया जाता है। इसके मरीज को आराम करना चाहिये, तरल पदार्थों का सेवन ज्यादा मात्रा में करना चाहिये। पानी का सेवन ज्यादा करना चाहिये। दवाईयों में पैरासिटेमॉल, इव्यूप्रोपन, नेप्राक्सीन जैसी दवाईयों के सेवन से जोड़ों के दर्द शरीर दर्द एवं बुखार में आराम मिलता है, एस्प्रीन का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिये।

कुछ शोध पत्रों से पता चला है कि मलेरिया की दवाई क्लोरोक्विन को प्रतिदिन दो बार देने से भी जोड़ों में दर्द में आराम मिलता है। गर्भवती महिलाओं में बुखार से पीड़ित होने पर प्रसव के 3 से 5 माह के प्रसव के बीच में बच्चे को यह संक्रमण हो सकता है। पर यह बच्चे में लिये सीरियस नहीं होता एवं अधिकतर बच्चे बिना किसी व्याधियाँ दिये पूर्णत: ठीक हो जाते हैं।

बचाव : मच्छर के काटने से बचने के उपाय करना चाहिये। यह बीमारी भी ऐडिस एजिप्शाई नामक मच्छर के काटने से होती है। यही मच्छर डेन्गू बुखार के लिये भी जिम्मेदार होता है। यह मच्छर चितकबरा होता है और ज्यादातर दिन में काटता है। यह रुके पानी में पनपता है। अत: घर में व आसपास पानी न जमा होने दें। ●●●

मधुमेह

मीठा कर दें बिलकुल बन्द,
इलाज का हो ठीक प्रबन्ध ।
दवा में कभी न करें चूक,
भले ही जोर की लगे भूख।
रोग के पूर्ण दुष्प्रभाव जाने,
आने वाले कल को पहिचानें।
तभी आप बिलकुल सुखी रहेंगे,
मधुमेह के रोगी लम्बे जियेंगे।

– डॉ. नरेन्द्र नाथ लाहा
ग्वालियर